bl l|lkj e| vkune; thou ;kiu djuk gekjk bPNk g|A

लंबे समय से कहा जा रहा है कि यह संसार दुखों का संसार है और स्वर्ग परलोक में है। जीवन कष्टसाध्य है और परलोक में सुख की तलाश करती है। ऐसे लोग और समय थे।

हालाँकि तेन्रिक्यो संस्थापिका मिकी नाकायामा ने धोषणा की कि इस संसार में खुशी पूर्वक जीवन यापन करके इस लोक में आनंदमय जीवन से भरा हुआ संसार साकार करना है।

जैसे पुराने कपड़े उतारते हैं, ऐसे इस संसार से प्रस्थान करता है। और नये कपड़े पहनकर इस संसार में पुनर्जन्म करके फिर आनंदमय जीवन यापन करता है। काश, पुनर्जन्म का समय भी यह संसार अच्छा होता है। रहने योग्य संसार बनने के लिए, हम कोशिश करना चहते हैं।

आनंदमय जीवन : तेन्रिक्यो

bl l|lkj e| vkune; thou ;kiu djuk gekjk bPNk g|A

लंबे समय से कहा जा रहा है कि यह संसार दुखों का संसार है और स्वर्ग परलोक में है। जीवन कष्टसाध्य है और परलोक में सुख की तलाश करती है। ऐसे लोग और समय थे।

हालाँकि तेन्रिक्यो संस्थापिका मिकी नाकायामा ने धोषणा की कि इस संसार में खुशी पूर्वक जीवन यापन करके इस लोक में आनंदमय जीवन से भरा हुआ संसार साकार करना है।

जैसे पुराने कपड़े उतारते हैं, ऐसे इस संसार से प्रस्थान करता है। और नये कपड़े पहनकर इस संसार में पुनर्जन्म करके फिर आनंदमय जीवन यापन करता है। काश, पुनर्जन्म का समय भी यह संसार अच्छा होता है। रहने योग्य संसार बनने के लिए, हम कोशिश करना चहते हैं।

आनंदमय जीवन : तेन्रिक्यो

No.8（ヒンディー語）

जैसे पाँचों उँगलियों में से किसी एक को काटने पर दर्द होता है, वैसे ही तुमहारे भाई–बहन में से किसी एक को काटने पर दर्द होता है, तो तुमको भी दर्द होता है।

(परमेश्वर का वाणी "ओसाशिजु" = 27 दिसंबर 1899)

परमेश्वन जनक–जननी सभी मनुष्यों के माता–पिता हैं, और हम सब अपने भाई–बहन हैं। चाहे हम कहीं भी हैं। आगर कोई सूखा या ठंड से नुकसान उठाकर रो रहे हैं, भूकंप, हवाए, और बाढ़ से क्षति उठाकर छटपटा रहे हैं, भूख से पीड़ित हो रहे हैं, तो ऐसे कठिन होने वाले या र्ददनाक होने वालों को मदद के लिए हाथ बढ़ाएं। परमेश्वन जनक–जननी हमेशा ऐसा चाहते हैं कि इसी मन को भूलना न चाहिए।

"पाँच उँगलियाँ जैसा हम सब मदद करना चाहिए"। आपातकालीन समय, तुरंत प्रतिक्रिया चाहिए। पारस्परिक सहयोग की भावना को व्यवहार में दिखाना चाहेंगे।

जैसे पाँचों उँगलियों में से किसी एक को काटने पर दर्द होता है, वैसे ही तुमहारे भाई–बहन में से किसी एक को काटने पर दर्द होता है, तो तुमको भी दर्द होता है।

(परमेश्वर का वाणी "ओसाशिजु" = 27 दिसंबर 1899)

परमेश्वन जनक–जननी सभी मनुष्यों के माता–पिता हैं, और हम सब अपने भाई–बहन हैं। चाहे हम कहीं भी हैं। आगर कोई सूखा या ठंड से नुकसान उठाकर रो रहे हैं, भूकंप, हवाए, और बाढ़ से क्षति उठाकर छटपटा रहे हैं, भूख से पीड़ित हो रहे हैं, तो ऐसे कठिन होने वाले या र्ददनाक होने वालों को मदद के लिए हाथ बढ़ाएं। परमेश्वन जनक–जननी हमेशा ऐसा चाहते हैं कि इसी मन को भूलना न चाहिए।

"पाँच उँगलियाँ जैसा हम सब मदद करना चाहिए"। आपातकालीन समय, तुरंत प्रतिक्रिया चाहिए। पारस्परिक सहयोग की भावना को व्यवहार में दिखाना चाहेंगे।